संतरा खेती, सफलता की कहानी, कृषक की जुबानी

मै सिद्वराज पुत्र श्री चैन सिंह जाति राजपूत निवासी दुड़कली ग्राम पंचायत रीछड़िया पंचायत समिति, खैराबाद जिला– कोटा (राज0) कोटा का कृषक हूँ। मेरे परिवार के पास 8.5 हैक्टर पैतृक कृषि भूमि है। उक्त भूमि की आमदनी से ही मैरे परिवार का गुजर बसर होता आ रहा था। खेती के अतिरिक्त मेरे परिवार के पास अन्य कोई व्यवसाय नही था। मैने सैकण्डरी तक शिक्षा प्राप्त की हुई है। मेरी भूमि असिंचित क्षेत्र में है जहॉ पानी की अत्यधिक कमी है नहर का साधन भी नही है एक मात्र कुॅए से ही सिंचाई की जाती है, जिसमे खरीफ सीजन में ज्वार, मक्का, उड़द, सोयाबीन व रबी सीजन में गेंहू,सरसो, चना धनिया आदि फसले होती है। इन फसलो की खेती में प्रकृति प्रकोप यथा अति वृष्टि, सूखा, ओला वृष्टि से अधिक नुकसान होता था। प्रकृति के प्रकोप से पूरी फसल चोपट होने से आर्थिक संकट खड़ा हो जाता था।

सन् 2000 में उद्यान विभाग के कृषि पर्यवेक्षक के सम्पर्क में आया, इनकी प्रेरणा से 2.5 हैक्टर में संतरा का बगीचा उद्यान विभाग से अनुदान सहायता पर स्थापित किया तथा अनुदान पर ही बगीचे में बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली की स्थापना करावाई, जिसमें मैने चार वर्ष तक पौधो के बीच में अन्तराशष्य फसले उगाई जिससे बगीचे वाली भूमि में भी मूझे फसल से अतिरिक्त उत्पादन मिलता रहा।

चौथे वर्ष बगीचे से फलोत्पादन आना शुरू हो गया इसके बाद मुझे बगीचे से समस्त खर्चे (निराई,गुडाई,सिचाई, खाद, उर्वरक एवं अन्तरा कृषि क्रियायें आदि) निकालने के बाद भी प्रति वर्ष उक्त 2.5 हैक्टर के फलदार बगीचे से 7.5 लाख रूपये शुद्व आय प्राप्त कर लेता हूॅ। जबकि परम्परागत फसलो में यदि मौसम अनुकूल रहे तो भी समस्त खर्चे निकालने के बाद भी 2 से 2.5 लाख रूपये से अधिक आमदनी नही होती थी। पानी की कमी के कारण बूंद–बूंद सिंचाई से पानी की बचत होती है, उसी पानी मे 15 बीघा बगीचे में सिंचाई करने से मुझे 7.5 लाख रूपये की शुद्ध आय प्राप्त होती है। जिसकी परम्परागत खेती में कल्पना करना भी मुश्किल है। साथ ही उद्यान विभाग द्वारा राष्ट्रीय बागवानी मिशन में जीर्णोद्धार कार्यक्रम के तहत बगीचा संभालने के लिए उपकरण, उर्वरक एवं किट इत्यादि प्राप्त किये, जिससे बगीचों की सार–सभांल में मुझे लाभ हुआ। आने वाले वर्षो में बागवानी के अन्तर्गत और अधिक क्षेत्र को बढाना चाहूंगा, तथा सभी किसान भाईयों से अपील करता हूॅ कि आपकी कुल भूमि के कुछ क्षेत्र में फलदार बगीचा अवश्य लगाये ताकि स्थाई आमदनी का स्त्रोत पक्का हो जाये व प्रकृति प्रकोपो में परिवार को विषम आर्थिक स्थिति का सामना नही करना पडे।

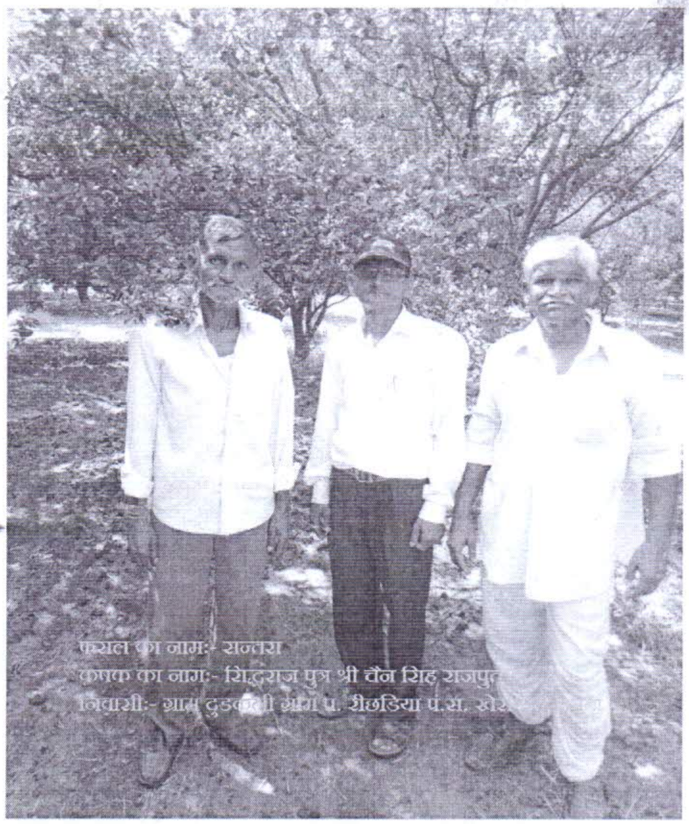
फसल का नाम:- सन्तरा
कृषक का नाम:- सिद्दराज पुत्र श्री चैन सिह राजपूत
निवासी:- ग्राम